International Research Journal of Humanities, Language and Literature
ISSN: (2394-1642)
Impact Factor 7.972 Volume 12, Issue 02, Feb 2025
Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
Website-www.aarf.asia, Email : editor@aarf.asia , editoraarf@gmail.com

भूमण्डलीकरण और हिंदी साहित्य

प्रिया रानी
शोधार्थी हिंदी विभाग,
मगध विश्वविद्यालय बोध गया, बिहार

शोध निर्देशिका -डॉ. साधना कुमारी

शोध सार

''अंग्रेजी के 'ग्लोबलाइजेशन' शब्द के लिए हिंदी में 'भूमण्डलीकरण' शब्द प्रचलित है। इसके लिए 'वैश्वीकरण' शब्द भी प्रयुक्त होता है। यह शब्द बीसवीं सदी के अंतिम दशक में व्यापक रूप में प्रयोग में आया।"[1] भूमण्डलीकरण की यह परिघटना अपने व्यापक रूप में 1991 में घटी, सोवियत संघ के विघटन के बाद जब दुनिया एक ध्रुवीय हो गयी और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों ने अमेरिका के नेतृत्व में तीसरी दुनिया के बाजार पर कब्जा करना शुरू किया। भारत ने भी इसमें अपनी भागीदारी घोषणपूर्वक 1991 में ही दर्ज की जब विदेशी मुद्रा के संकट के कारण 24 जुलाई को नयी उद्योग नीति की घोषणा की गई।

'भूमण्डलीकरण' शब्द से 'वसुधैव कुटुम्बकम' व 'सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय' की भावना का भ्रम पैदा होता है मानो यह एक ऐसी व्यवस्था है जिसमें लोग अपने छोटे स्वार्थों से ऊपर उठकर, विश्व के मंगल के लिए एकजुट हो जायेंगे किन्तु यह व्यवस्था पूँजीवादी प्रतिष्ठानों व बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के हिवों का रक्षा का माध्यम बनी हुई है। ''हालांकि, इससे यह भ्रम पैदा होता है कि संसार के लोग जुड़ रहे हैं और संसार एक 'वैश्विक गांव' बन गया है, परन्तु वास्तव में इससे सिर्फ संसार का एक सम्पन्न वर्ग ही अपने व्यापारिक या व्यावसायिक हितों के लिए एक दूसरे से जुड़ता है। प्रत्येक क्षेत्र और देश में नये संचार माध्यमों से संसार से जुड़े समूह अपने ही आस-पास के बहुसंख्यक वंचित समूहों से पूरी तरह कट जाते हैं। संसार का एक नया विभाजन सूचना समृद्ध और सूचना से वंचितों के बीच होता है।''[2]

दुनियाभर के जो लोग इसके इतिहास से परिचित नहीं है उन्हें लगता है कि यह समस्या अचानक न जाने कहाँ से आ टपकी, किन्तु इसके लिए धीरे-धीरे वर्षों से राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक जमीन तैयार हो रही थी। ''हमारे मिथकों में अगर भूमण्डलीकरण से प्रभावित आज के हालात की कोई मिसाल मिल सकती

© Association of Academic Researchers and Faculties (AARF)
A Monthly Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International e-Journal - Included in the International Serial Directories.

है तो वह सिर्फ समुद्रमंथन की पुराणगाथा ही है, जिसमें सभी पक्ष जुटे हुए थे और किसी को ठीक-ठीक नहीं पता था कि सुमेरू पर्वत से बनी उस विराट मथानी से क्या-क्या निकलेगा। लेकिन मंथन में शामिल होने के कारण वे सभी उन परिणामों का फल भोगने के लिए अभिशप्त थे।''[3] इसी तरह आज भी सभी राष्ट्र बिना परिणाम जाने इस प्रक्रिया में सम्मिलित होना चाहते हैं जो राज्य, क्षेत्र व लोग इसके दायरे में नहीं आना चाहते भूमण्डलीकरण ने उन्हें हाशिये पर डाल दिया है। 'भूमण्डलीकरण और हाशियाकरण एक ही परिघटना की प्रतिछवियाँ हैं।''[4] भूमण्डलीकरण आज खुद को मुख्यधारा की संस्कृति के रूप में स्थापित कर चुका है ''यही कारण है कि आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के सिद्धांतकार और विचारक हमें समझा रहे हैं कि राष्ट्रवाद या राष्ट्रीयता पुरानी चीज हो गयी है। क्षेत्रीय स्वायत्तता और भाषा के आधार पर संस्कृति की पहचान करना पिछड़ापन है। अपनी राष्ट्रीयता, अपनी भाषा, अपनी संस्कृति के बारे में सोचना विकास की सहज गति को अवरूद्ध करना है।''[5]

भूमण्डलीकरण के इस दौर में आगे बढ़ने की धुन इस तरह सवार है किइस प्रक्रिया में जो हाशिये पर रह जायेगा भूमण्डलीकरण उसे धकेलते हुए आगे बढ़ जायेगा। ''वैश्वीकरण आज थोड़े लोगों के हाथों में केन्द्रित एक ऐसी संस्कृति का निर्माण कर करा रहा है जिसमें हाशिये के लोगों को उससे भी बाहर धकेलने की पूरी तैयारी कर ली गई है।''[6] भूमण्डलीकरण राष्ट्रीय, क्षेत्रीय एवं सांस्कृतिक सीमाओं के ऊपर सदैव हावी रहा, इसने सरहदों को कभी सीमा नहीं बनने दिया ''सवा सौ साल से ज्यादा लम्बे इस सफर में आधुनिकता ने इस मंजिल को कभी आँखों से ओझल नहीं होने दिया। वह लगातार कोशिश करती रही कि सत्ता की 'ग्लोबल' संरचनाएं अन्य सरहदों की नियामक बनें न कि उन्हें सरहदों की जरूरतों के मुताबिक काम करने पर मजबूर होना पड़े।''[7] इसका सम्बन्ध व्यापार, वित्तीय पूँजी, तकनीक, ज्ञान, संस्कृति और लोगों के आने-जाने के मामलों में राष्ट्रों की दीवारें टूटने से है।

अगर भूमण्डलीकरण को आधुनिकता की आर्थिक अभिव्यक्ति के रूप में देखा जाय तो अपने आरम्भिक पैंतालीस वर्षों में (1870 से 1914) के बीच यह तेज रफ्तार से दौड़ता नज़र आता है किन्तु प्रथम विश्व युद्ध ने इस क्रम को धीमा किया। इसके बाद पूरी दुनिया में जहाँ राष्ट्रों की सरहदें पूँजी और श्रम की नियामक हो गयीं वहीं द्वितीय विश्व युद्ध के बाद पूरी दुनिया दो हिस्सों में बंट गयी। और दोनों ही हिस्से एक दूसरे से प्रतियोगिता करते नजर आये ''इस प्रतियोगिता को हम वामपंथी बनाम दक्षिणपंथी या समाजवाद बनाम पूँजीवाद की प्रचलित श्रेणियों के नाम से जानते हैं।''[8] बीसवीं सदी के अंतिम दशक में जो भूमण्डलीकरण अपनी पूरी शक्ति के साथ हमें बढ़ता दिखाई देता है, जमीन सत्तर के दशक में बनने लगी थी ''उसे बनाने में न केवल पूँजीवाद के समर्थक जुटे हुए थे, बल्कि इसकी प्रतिक्रिया में कार्यरत पूँजीवाद के घोषित विरोधी भी जाने अनजाने हालात को उसी तरफ ले जा रहे थे। हथियारों की होड़ और अन्य बहुतेरे कारणों से जैसे ही तत्कालीन समाजवादी राज्य का ढाँचा संकटग्रस्त हुआ और दुनिया एक ध्रुवीय होने की तरफ बढ़ी, वैसे ही

भूमण्डलीकरण का रास्ता साफ होने लगा।''[9] विविधता व बहुसांस्कृतिकता को सुरक्षित करने के संदर्भ में भूमण्डलीकरण का आग्रह था कि समस्त राष्ट्र व संस्कृतियों कुछ समान मूल्यों को अपनायें साथ ही उसने यह धमकी भी दी कि अगर ऐसा नहीं किया जायेगा तो उससे ताकत के दम पर निबटा जायेगा। भूमण्डलीकरण के तीन आयाम हैं- आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सांस्कृतिक जिनमें आर्थिक सर्वप्रमुख है।

भारत ने 24 जुलाई, 1991 को पेश किये गये बजट व नयी उद्योग नीति के साथ भूमंडलीकरण के इस दौर में प्रवेश की घोषणा की। ''विदेशी मुद्रा संकट के कारण कांग्रेस की नरसिंह राव सरकार ने अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से कर्ज लिया। अन्तर्राष्ट्रीय वित्तीय पूँजी द्वारा निर्देशित ढांचागत समायोजन कार्यक्रम अपनाने का निर्णय लिया गया, जिसका मतलब था लोकहितकारी राज्य की संरचना को बदलकर आयात प्रतिस्थापन की जगह निर्याततोन्मुख विकासनीति पर आधारित बाजारोन्मुख नीतियाँ अपनाना, बड़े पैमाने पर निजीकरण का कार्यक्रम चलाना, विदेशी पूँजी को प्रोत्साहन देने वाली नीतियों अपनाना, बड़े पैमाने पर निजीकरण का कार्यक्रम चलाना, विदेशी पूँजी को प्रोत्साहन देने वाली नीतियाँ बनाना, लाइसेंस परमिट राज खत्म करके वाणिज्य और उद्योग नित में भारी बदलाव करना। राव सरकार के इस रवैये की अभिव्यक्ति नयी उद्योग नीति में हुई।''[10] तात्कालिक रूप में यह नीति विदेशी मुद्रा संकट के कारण कांग्रेस की नरसिंह राव सरकार के अन्तर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष से लिये गये कर्ज का परिणाम थी। किन्तु इसकी अघोषित भूमिका सत्तर व अस्सी के दशक से ही बनने लगी थी। सांस्कृतिक स्तर पर भारतीय अभिजनों ने भूमण्डलीकरण को आधुनिकता की अभिव्यक्ति के रूप में आसानी से स्वीकार कर लिया किन्तु इसका लाभ केवल अमीरों व साधन सम्पन्न लोगों को ही मिला।

भूमण्डलीकरण की इस परिघटना को आकार देने में संचार क्रांति की अहम भूमिका है। पिछले पच्चीस वर्षों से नेटवर्क सोसाइटी की रचना के माध्यम से एक ऐसी आभासी दुनिया का अविष्कार किया जा रहा है, जिसमें सबकुछ है मगर किसी भी चीज की दैहिक उपस्थिति नहीं। ''इण्टरनेट के संक्षिप्त इतिहास में बूरस स्टार्लिंग ने नेट की तुलना अंग्रेजी भाषा से की है, जो इस अर्थ में बिल्कुल सटीक है कि जैसे अंग्रेजी का कोई मालिक, पहरेदार या ठेकेदार नहीं है, उसी तरह नेट भी बहते नीर की तरह है- स्वतंत्र और अबाध।''[11] अभी नेट का अधिकतर कार्य अंग्रेजी में ही होता है, दुनिया में इतनी बड़ी संख्या में बोली जाने वाली भाषाओं के लिए यह एक तरह से भूमण्डलीकरण के लिए चुनौती भी है। ''यह विचार कि एक दुनिया के सभी लोग अंग्रेजी भाषी हो जाएँगे, एक ख्याली पुलाव सा लगता है।''[12] धीरे-धीरे लोगों ने कम्प्यूटर की भाषा को स्थानीयकृत करना शुरू किया और आज वर्ल्ड वाइड वेब, विभिन्न भाषाओं में उपस्थित है। साहित्य के भूमण्डलीकरण को लेकर सीमा भाषाओं की भिन्नता की है। ''उन्नीसवीं सदी की क्लासिक कृतियों का भूमण्डलीकरण उस तरह कभी भी नहीं हो पाया जैसे संगीत और अन्य चाक्षुस कलाओं का। इटली के बाहर ऐसे लोग बहुत कम होंगे जो दांते की काव्य प्रतिभा से परिचित हों और उसका महत्व समझते हों क्योंकि दांते को उन्होंने पढ़ा ही नहीं है। केवल

रूसी लोग और रूसी भाषा से परिचित लोग ही पुश्किन को रूस का सार्वकालिक महानतम कवि मानते हैं।''[13]

जहाँ तक हिन्दी बोलने वालों की संख्या का प्रश्न है, हिन्दी भाषा विश्व में तीसरे नम्बर पर है। विश्व में सबसे अधिक बोलने वालों की संख्या चीनी की है, दूसरे नम्बर पर अंग्रेजी और तीसरे पर हिन्दी। तकनीकी एवं सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से आज हिन्दी 'ग्लोबल विलेज' में प्रवेश कर चुकी है। इण्टरनेट पर सैकड़ों हजारों वेबसाइटस पर हिन्दी साहित्य की सामग्री बिखरी पड़ी है किन्तु अधिकांश सामग्री रोमन लिपि में होने व यूनिकोडित नहीं होने से हिन्दी साहित्य को इंटरनेट पर ढूँढ़ना और पढ़ना मुश्किल काम था। ललित कुमार ने 5 जुलाई 2006 को इण्टरनेट पर कविता कोश नामक परियोजना की शुरूआत की। आज यह कोश 55000 से भी अधिक रचनाओं का संकलन बन चुका है जिसमें दो हजार से अधिक रचनाकार संकलित हैं। ललित कुमार ने ही 2008 में गद्य कोश नामक नई परियोजना की शुरूआत की। जिस तरह कविता कोश हर काव्य विधा को अपने में समाहित करता है उसी तरह गद्य कोश की परिकल्पना भी एक ऐसे विश्व कोश के रूप में की गई जिसमें सभी गद्यात्मक विधाएँ संकलित हो सकें।

विश्व में इण्टरनेट के प्रयोग और हिन्दी में इसके आरम्भ में तीन दशकों का अंतर रहा है। यह अंतर इण्टरनेट पर उपलब्ध साहित्य में भी देखा जा सकता है। वर्तमान समय में विकीपीडिया, एनसाइक्लोपीडिया सन्दर्भ का अद्यतन स्त्रोत हैं। हर भाषा के अपने-अपने पोर्टल्स हैं। विश्व भाषाओं में अंग्रेजी, फ्रेंच, स्पेन, डच, जर्मन जैसी भाषाओं की भाषा और साहित्य की वेबसाइटें अधिक हैं। अंग्रेजी भाषा के जानकार दुनिया भर में हैं अंग्रेजी भाषा की वेबसाइटें दुनिया भर से चलाई जाती है और सारी दुनिया के लोग उन्हें लिखते पढ़ते भी है अतः अंग्रेजी साहित्य का स्तर हिन्दी की तुलना में उच्च होना स्वाभाविक हैं।

हिन्दी में भी नियमित रूप से ऑनलाइन लेखन करने वाले हिन्दी प्रेमी व सैकड़ो वेबसाइटें है- किन्तु उनके अद्यतन न होने व विभिन्न विश्वविद्यालय व विभागों की उपस्थिति इण्टरनेट पर नियमित न होने से अभी हिन्दी साहित्य की विश्व में भागीदारी की संभावनाओं पर प्रश्न चिन्ह लगना स्वाभाविक ही है। हिन्दी साहित्य ने इण्टरनेट के माध्यम से 'ग्लोबल विलेज' में अपनी उपस्थिति तो दर्ज करा दी है किन्तु वैश्विक पटल पर अपना स्तर बनाने व सर्वोच्च स्थिति में पहुँचने में अभी समय लगेगा।

संदर्भ सूची

1. डॉ. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, दूसरे संशोधित संस्करण की पहली आवृत्ति 2013, पृ. 258
2. वही, पृ. 259

3. सम्पा. - अभय कुमार दुबे, भारत का भूमण्डलीकरण, श्रृंखला सम्पादक विजय बहादुर सिंह, योगेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण 2008, पृ. 27
4. वही, पृ. 91
5. डॉ. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन**,** नई दिल्ली, दूसरे संशोधित संस्करण की पहली आवृत्ति 2013, पृ. 259
6. मिथिलेश, वैश्वीकरण का त्रासद आख्यान : ग्लोबल गांव के देववा; सम्पा. अरूण कमल पत्रिका आलोचना (त्रैमासिक) सहस्त्राब्दी अंक उनचास, अप्रैल-जून, 2013, पृ. 100
7. सम्पा. - अभय कुमार दुबे, भारत का भूमण्डलीकरण, श्रृंखला सम्पादक विजय बहादुर सिंह, योगेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण 2008, पृ. 28
8. वही, पृ. 29
9. वही, पृ. 32
10. वही, पृ. 44
11. लेखक, रविकांत, लेख, भविष्य का इतिहास, सम्पादक अभय कुमार दुबे, भारत का भूमण्डलीकरण (वही), पृ. 290
12. लेखक (इरिक हॉब्सबॉम और एन्तोनियोपोलितो की बातचीत से) इरिक हॉब्सबॉम का कथन, लेख भूमण्डलीकरण : अर्थव्यवस्था, राजनीति और संस्कृति, सम्पादक अरुण कमल, पलिका-आलोचना (त्रैमासिक) सहस्त्राब्दी अंक सैतालीस (अक्टूबर-दिसम्बर 2012), पृ. 66
13. वही, पृ. 64